अध्याय-5

नशाखोरों के परिवारों की दशा एवं दिशा :

पश्चिमी सभ्यता ने हमारे देश को किस तरह अपनी ओर आकर्षित किया, इससे सभी भलीभाँति परिचित हैं, इसकी ओर देश के युवा सबसे अधिक आकर्षित होते हैं, और अपनी भारतीय संस्कृति छोड़ पाश्चात्य संस्कृति के पीछे भागते हैं, नशाखोरी भी इसी का उदाहरण है, भारत देश की बड़ी मुख्य समस्याओं में से एक युवाओं में फैलती नशाखोरी भी है, देश की जनसंख्या आज 125 करोड़ के पार होते जा रही है, इस जनसंख्या का एक बड़ा भाग युवा वर्ग का है, नशा एक ऐसी समस्या है, जिससे नशा करने वाले के साथ–साथ, उसका परिवार भी बर्बाद हो जाता है, और अगर परिवार बर्बाद होगा तो समाज नहीं रहेगा तो देश भी बिखरता चला जायेगा, इन्सान को इस दलदल में एक कदम रखने की देरी होती है, जहाँ आपने एक कदम रखा फिर आप मजे के चलते इसके आदी हो जायेंगे और दलदल में धसते चले जायेगे, नशे के आदी इन्सान, चाहे तो भी इसे नहीं छोड़ पाता, क्योंकि उसे तलब पड़ जाती है, और फिर तलब ही उसे नशा की ओर और बढ़ाती है।

नाश–नाश है हर रोज नशा के सेवन से मरने वालों लोगों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है

क्योंकि नशाखोर और परिवार के सदस्य भी कई तरह का नशा करने लगता है। जिसमें शराब, सिगरेट, अफीम, गाँजा, हेरोइन, कोकीन, चरस मुख्य है, नशा एक ऐसी आदत है, जो किसी इन्सान को पड़ जाये तो, उसे दीमक की तरह अन्दर से खोखला बना देती है, उसे शारीरिक, मानसिक, व आर्थिक रूप से बर्बाद कर देती है, जहरीले और नशीले पदार्थ का सेवन इन्सान को बर्बादी की ओर ले जाता है, आजकल नशा का प्रभाव से निर्बल वर्ग के लोग भी प्रभावित हो रहे है, युवाओं के साथ–साथ बड़े बुजुर्ग भी इसकी गिरफ्त में है, लेकिन सबसे अधिक ये युवा नयी पीढ़ी को प्रभावित कर रहे हैं, युवा पीढ़ी के अन्दर सिर्फ निर्बल वर्ग के लोगों को किया गया है, नशा करने वाला व्यक्ति घर, देश, समाज के लिये बोझ बन जाता है, जिसे सब नीची दृष्टि से देखते है, नशा करने वाले व्यक्ति का न कोई भविष्य होता है, न वर्तमान, उसके अन्त में लोग दुखी नहीं होते हैं, देश में जो आज आतंकबाद, नक्सलवाद, बेरोजगारी की समस्या फैल रही है, इसका जिम्मेदार कुछ हद तक नशा भी है, नशा के चलते इन्सान अपना अच्छा बुरा नहीं समझ पाता और गलत राह में चलने लगता है। ऐसा अनेक समूहों में देखने को मिलता है।

नशाखोरी का समाज में फैलने का कारण (Nashakhori Reason)– शिक्षा की कमी– देश में शिक्षा की कमी की समस्या आज भी व्याप्त है, सरकार इसकी ओर कड़े कदम उठा रही है, शिक्षा का महत्व हमारे जीवन में बहुत

है, लेकिन कई लोग इसे नहीं समझते हैं, और शिक्षा की कमी के चलते कई दुष्प्रभाव सामने आते हैं, जो लोग कम पढ़े लिखे होते हैं वे इसके दुष्प्रभाव को नहीं समझते हैं, और इसकी चपेट में आ जाते हैं, गाँव में कम पढ़े लिखे लोग कई तरह के नशा करते हैं, जिससे उनका परिवार तक नष्ट हो जाता है नशा सम्बन्धी पदार्थों की खुलेआम बिक्री–हम व हमारे देश की सरकार नशा के दुष्परिणामों को जानती हैं, लेकिन फिर भी इसकी बिक्री खुलेआम होती है, नशा के पदार्थ आसानी से कहीं भी मिल जाते हैं, जिससे इसे देख देखकर भी लोग इसकी ओर आकर्षिक होते हैं, संगति का असर– स्कूल के बच्चों में ये नशाखोरी संगति के चलते फैलती है, कम उम्र में ये बच्चे भटक जाते हैं, और ऐसे लोगों के साथ संगति करते हैं, जो नशा को अपना जीवन समझते हैं, बच्चों के अलावा युवा को भी कई बार संगति ही बिगाड़ती है, युवा पीढ़ी के कई ऐसे दोस्त होते हैं, जो नशा करते हैं और देखा–देखी में वे भी इसे करने लगते हैं जो लोग इस नशा को करते हैं, वे अपने साथ वालों को भी इसे करने के लिये प्रेरित करते हैं, मॉडर्न बनने के लिये–नशा को कुछ लोग आधुनिकता का माध्यम मानते हैं, उनका मानना होता है, नशा करने से लोग उन्हें एडवांस समझेंगे और उनकी वाह वाही होगी, नशा को अमीरों की शान भी माना जाता है, उन्हें लगता है, नशा करने से हमारा रुतवा सबको दिखेगा, जो व्यक्ति शिक्षित हैं, वो भी नशा से दूर नहीं हें, उनका मानना है कि नशा करने से

उनकी बुद्धि में विकास, याददाश और आन्तरिक शक्ति में विकास होता है, पाश्चात्य संस्कृति– पाश्चात्य सभ्यता में मादक पदार्थ का सामाजिक रूप से स्वीकारा गया है, जिससे यहाँ खुलेआम लोग इसे लेते हैं और इसकी खपत भी अधिक होती है, इसे देख–देख हमारे देश के युवा अपने आप को पाश्चात्य संस्कृति में ढालने के लिये नशा को अपनाते हैं, उनका मानना होता है, नशा उन्हें पाश्चात्य बनायेगा। सिनेमा का प्रभाव– हमारे सिनेमा जगत का नशाखोरी फैलाने में बहुत बड़ा हाथ है, टी.वी., फिल्मों में खुलेआम शराब, सिगरेट, गुटखा खाते हुये लोगों को दिखाया जाता है, जिससे आम जनता विशेषकर बच्चे और युवा प्रभावित होते हैं, और उसे अपने जीवन में उतार लेते हैं, टी.वी. पर तो इसके बड़े–बड़े विज्ञापन भी आते हैं, जिस पर हमारे देश की सरकार भी कोई कदम नहीं उठा रही है, युवा टी.वी. पर देखते हैं, कैसे किसी का दिल टूटने पर जब गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप होने पर वो भी देवदास बन शराब पीने लगता है, तनाव, परेशानी–किसी तरह की पारिवारिक परेशानी, समस्या के कारण भी इन्सान नशा का आदि हो जाता है अपना गम को भुलाने के लिये इन्सान नशा करने लगता है, लेकिन इससे वो नशा के द्वारा दूसरी समस्या को बुलावा दे देता है, बेरोजगारी, गरीबी, कोई बीमारी या किसी पारिवारिक समस्या के चलते इन्सान नशा की ओर रूख करता है, मूड़ को बदलने के लिये भी लोग नशा करना पसन्द करते हैं, उनके हिसाब से नशा करने के बाद उन्हें

अपने दुःख दर्द याद नहीं रहते और उन्हें सुख की अनुभूति होती है।

नशाखोरी के दुष्परिणाम :

गरीबी बढ़ती है– आगरा नगर में कई ऐसे परिवार हैं जो एक वक्त की रोटी के लिये रोते हैं, उन्हें बिना खाना खाये सोना होता है, नशा का आदि इन्सान भले खाना न खाये, लेकिन उसके लिये नशा बहुत जरूरी होता है, वह अपनी दिन भर की कमाई नशा में गवाँ देता है, यहाँ तक नहीं सोचता की कि उसके बच्चे भूखे हैं, जो इन्सान पैसा नहीं कमाता, अपने घर के पैसों को इस नशे में लगा देता है, जिससे घर के दूसरे लोगों के लिये समस्या खड़ी हो जाती है, रोज रोज के इस खर्चे से घर में गरीबी आने लगती है, जिससे घर में खाने पीने तक की समस्या हो जाती है नशा एक ऐसी समस्या है, जो दूसरी समस्या को न्योता देती है, इससे गरीबी आती है, बेरोजगारी, आतंकवाद फैलता है। देश में अपराधियों की संख्या बढ़ने लगती है। नशा वाला इन्सान घरेलू हिंसा बुलावा–नशा करने वाला इन्सान अपना आपा खो देता है, उसे याद नहीं होता है वो कहाँ है, क्या कर रहा है, नशा वाला इन्सान घरेलू हिंसा को दावत देता है, वह घर आने पर अपनी पत्नी एवं बच्चों को गाली–गलौज एवं मारपीट करने लगता है अपराधी बना देता है– नशा एक अपराध से कम नहीं है और नशा वाला इन्सान एक अपराधी, नशे की तलब को पूरा करने के लिये

इन्सान चोरी करने लगता है, और छोटे–छोटे अपराध कब बड़े अपराध में बदल जाते हैं पता ही नहीं रहता और इस नशे के बाद इन्सान चोरी, मृत्यु, हिंसा, लड़ाई–झगड़े, बलात्कार जैसे कामों को अंजाम देता है, जो उसे एक बड़ा, अपराधी बना देता है, घर टूटते हैं भविष्ट नष्ट होता है– नशेबाज को नशे के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता है, मैंने ऐसे कई किस्से सुने हैं, जहाँ नशा ने अच्छे खास बने बनाये इन्सान को बर्बाद कर देता है, नशा इन्सान का भविष्य नष्ट कर देता है। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या–नशा की लगातार लत से शरीर नष्ट हो जाता है, तम्बाकू, शराब, सिगरेट अधिक पीने से शरीर में फेंफड़े, गुर्दा, दिल, और न जाने क्या–क्या खराब होने लगता है, हम सबको पता है, धूम्रपान हमारे स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है, फिर भी हम इसके आदि हो जाते हैं, धूम्रपान का धुँआ अगर सामने वाले व्यक्ति के शरीर में भी जाता है, तो उसे नुकसान पहुँचता है, इसी तरह गुटखा जिस पर लिखा भी होता है कि इसे खाने से स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या होती है फिर भी लोग मजे से इसे खाते हैं, मुँह का कैंसर, गले का कैंसर सब नशा के कारण होते हैं, नशा करने से व्यक्ति की उम्र घटती जाती है, और ये कई शोध के द्वारा प्रमाणित हो चुका है, अलग–अलग नशा पदार्थ अलग–अलग नुकसान देते हैं, शराब पीने से लीवर, पेट खराब होता है, और लीवर कैंसर भी होता है, गुटखा खाने से मुँह में कैंसर, अल्सर की परेशानी होती है, गाँजा, भाँग से इन्सान का दिमाग खराब होने लगता है,

इससे वो पागल भी हो सकता है, परिवार टूट जाते हैं– नशेबाज इन्सान अपने परिवार से ज्यादा अपने नशे को तवज्जो देते हैं, जिससे परिवार टूट जाता है, नशाखोरी, आज के समय में परिवार बिखरने की सबसे बड़ी वजह है, नशे के चलते पति पत्नी में झगड़े बढ़ते हैं, जिसका असर बच्चों पर भी होता है, कई बार तो ये बच्चे बड़े होकर अपने बड़ों की तरह ही काम करते हैं और नशा को अपना लेते हैं।

मादक पदार्थ का सेवन इन्सान को घटक से घटक बना देता है, वो अपनी तलब को पूरा करने के लिये किसी भी हद तक जा सकता है, हमारे देश की सरकार देश की इस बड़ी समस्या की ओर उतनी नजर नहीं की हुई है, जितनी उसे करना चाहिए, सरकार को नशामुक्ति के लिये कड़े कदम उठाने चाहिए।

सरकार को खुलेआम मादक पदार्थ का सेवन पूरी तरह से बन्द कर देना चाहिए, सिनेमा, टी.वी. में इसके प्रयोग को वर्जित करना चाहिए, नशाखोरी की समस्या के बारे में लोगों को बताने के लिये कैम्पेन, सभा आयोजित करनी चाहिए, गाँव, शहर सभी जगह लोगों को इस समस्या के बारे में खुलकर बताना चाहिए, नशाखोरी सिर्फ भारत देश की ही नहीं, पूरे विश्व की समस्या है तो इससे निपटने के लिये, सभी देशों को इकट्ठे होकर काम करना चाहिए नशामुक्ति केन्द्र, परामर्श कार्यालय अधिक से अधिक खोले जाएँ। तथा नई पीढ़ी/ निर्बल वर्ग को नशाखोरी से बचायें।

समाज में बढ़ती नशाखोरी की प्रवृत्ति के अनेक घातक परिणाम सामने आ रहे हैं। इससे समाज में अनुशासनहीनता बढ़ रही है, शहर व गाँव की न्याय व्यवस्था चरमरा रही है तथा परिवार उजड़ रहे हैं। नशाखोरी के कारण लोगों की मानसिक, शारीरिक तथा आर्थिक हालत बिगड़ रही है। नई पीढ़ी निर्बल वर्ग में भी नशाखोरी की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यदि समय रहते इस प्रवाह को नहीं रोका गया तो इसके घातक परिणाम होंगे। व्यक्ति चाहे अमीर हो या गरीब, युवा हो या वृद्ध, महिला हो या पुरुष कोई भी वर्ग इस रोग से अछूता नहीं है। आज हमें घर हो या दफ्तर, स्कूल हो या कालेज, गाँव हो या 'शहर सभी स्थान पर नशाखोर व्यक्ति या व्यक्तियों की जमात दिखाई देती है। नशाखोरी केवल एक रोग नहीं बल्कि यह अनेक रोगों की जननी भी है, इसी प्रवृत्ति के चलते मनुष्य का मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक पतन तेजी से हो रहा है। सामाजिक मर्यादायें भंग हो रही हैं। नैतिक मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है। समाज में बढ़ रही आपराधिक प्रवृत्ति के लिये सबसे ज्यादा जिम्मेदार किसी को माना जा सकता है तो वह नशाखोरी ही है। 'शराब के नशे में चूर व्यक्ति असामान्य हालात में क्या हरकते नहीं करता। आये दिनों नशाखोरों के नित्य नये तरीके देखने सुनने व पढ़ने को मिलते हैं। नशाखोरी से न केवल अपराध बढ़ रहे हैं बल्कि इससे दुर्घटनाएँ भी तेजी से बढ़ रही हैं। आधे से अधिक सड़क दुर्घटनाओं के लिये नशाखोरी को ही जिम्मेदार माना गया है। कभी यात्री बस

पलट जाती है, तो कभी बारातियों से भरा वाहन दुर्घटना ग्रस्त हो जाता है। अनेकों लोग इसकी वजह से अकाल मृत्यु के शिकार हो रहे हैं अथवा निःशक्त हो रहे हैं। 'शराब पीना केवल मजबूरी नहीं बल्कि यह ऐश्वर्य प्रदर्शन का एक माध्यम बन गया है। अनेक लोग इसे विलासिता की वस्तु मान कर इस्तेमाल करते हैं। अपनी तथा कथित प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाने के लिये मँहगी से मँहगी शराब पीना आज फैशन हो गया है। यह समझ से परे है कि खुद तमाशबीन बनकर कोई कैसे अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाता होगा। तीज त्योहार हो या मांगलिक कार्य पीने वालों को तो केवल बहाना ही चाहिए। आज के युग में महफिल सजे बिना कोई जश्न सम्भव ही नहीं है। नशा खोरी के कारण धार्मिक सामाजिक या राजनैतिक आयोजनों का निर्विध्न सम्पन्न हो जाना किसी आश्चर्य से कम नहीं नशाखोरी व्यक्ति सब कुछ खोता जा रहा है। नशे के लिये वह घर परिवार एवं जर्मीन जायदाद बरबाद कर देता है। इन तथा कथित नशाखोरों के व्यसन के कारण समाज में अनैतिकता एवं अनुशासनहीनता बढ़ रही है। सामाजिक व्यवस्थायें चकनाचूर हो रही हैं। आपस के रिश्ते कमजोर होते जा रहे हैं एवं परिवार उजड़ रहा है। मेहनत कश लोग पी–पी कर सूख रहे हैं और शराब के निर्माता व वितरक हरे हो रहे हैं। चंद लोगों के जीवन की हरियाली के लिये समूचे समाज को बंजर बनाया जा रहा है। हमें यह भी सोचना होगा कि लाखों–करोड़ों जिन्दगियों को तबाह करने का लाइसेंस क्या मुट्ठीभर लोगों के दे दिया

जाये। देश में भौतिक विकास के नाम पर प्रतिवर्ष अरबों रुपये खर्च हो रहें लेकिन यह विकास किसके लिये ? भौतिक विकास के साथ नैतिक विकास भी जरूरी है। देश में मौजूद मानव संसाधन कितना स्वस्थ, पुष्टि एवं मर्यादित है हमें यह देखना होगा। मानव संसाधन के समुचित दोहन से ही राष्ट्र विकसित हो सकता। देश में मौजूद मानव संसाधन को रचनात्मक विकास की दिशा में लगाना होगा। कोई देश या समाज अपने मानव संसाधन को निरीह, निःशक्त या निर्बल बनाकर खुद कैसे शक्तिशाली हो सकता ? यह नशाखोरी का ही दुष्परिणाम हो सकता है ? कि मानव कमजोर, आलसी व लापरवाह होता जा रहा है। हमें नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति को रोकना होगा। लोगों के हाथों में दारू की बोतल नहीं बल्कि काम करने वाले औजार होने चाहिए। कौन देगा उन्हें ऐसी प्रेरणा ? इस बुरी लत को सरकार के किसी कानून से खत्म नहीं किया जा सकता। इसके लिये समाज में जागरूकता लानी होगी। नई पीढ़ी के निर्बल वर्ग को इस मद्यपान के दुष्परिणामों को बोध कराना होगा। समाजसेवियों एवं समाज के कर्णधारों को बिना वक्त गवायें अब इस दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है तभी नशाखोरों के परिवारों के परिवार की दशा एवं दिशा में हमें शान्ति, सद्भाव व भाईचारे का वातावरण निर्मित कर स्वस्थ समाज का निर्माण करना है। नशाखोरी के खिलाफ ‘‘नशा है खराब का सन्देश चारों ओर गूँज रहा है। इसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। क्षेत्रों में एक नई चेतना का

संचार हुआ है मन चाहे खुश हो या दुःखी कुछ कहता जरूर है, दुःख बाँटने से कम होता है और सुख बाँटने से बढ़ता है।

<u>समाज के लिये अभिशाप बनता नशा</u> :-

नशा जिसे हम एक सामाजिक बुराई कहते हैं, के कारण आज के निर्बल वर्ग के युवा विनाश की गर्त में जा रहे हैं। आज समाज में नशाखोरी प्रवृत्ति इस तरह अपना साम्राज्य फैला चुकी है कि निर्बल वर्ग के युवा इसके कारण मौत के आगोश में समा रहे हैं। आये दिन नशे की ओवरडोज के कारण किसी न किसी घर का चिराग बुझता रहता है। नशाखोरी के कारण समाज में अनुशासनहीनता बढ़ रही है। गाँव व शहर की न्याय व्यवस्था चरमरा रही है तथा परिवार के परिवार उजड़ रहे हैं। लोगों की मानसिक, शारीरिक तथा आर्थिक हालत बिगड़ रही है।

नई पीढ़ी में तो नशाखोरी की प्रवृत्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। नशे के कारण तो नई निर्बल वर्ग युवा पीढ़ी शिक्षा प्राप्ति के मार्ग से विमुख हो रही है। व्यक्ति चाहे अमीर हो या गरीब, युवा हो या वृद्ध वर्ग इस नशे की प्रवृत्ति से अछूता नहीं है। घर से बाहर काम पाने का स्थान शहर, सड़क हो या नुक्कड़ सभी स्थानों पर नशाखोरी की जमात दिखाई देती है।

नशाखोरी क्या है? एक बीमारी या एक प्रवृत्ति जिसके चलते इंसान अपनी जिन्दगी से हाथ धो बैठता है।

यह केवल एक बीमारी नहीं है बल्कि यह अनेक रोगों की जननी भी है। इसी प्रवृत्ति के चलते मनुष्य का मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक पतन तेजी से हो रहा है। सामाजिक मर्यादाएँ भँग हो रही है। नैतिक मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है। समाज में बढ़ रही आपराधिक प्रवृत्ति के लिये सबसे ज्यादा जिम्मेदार किसी को माना जा सकता है तो वह नशाखोरी ही है। शराब के नशे में चर व्यक्ति असामान्य हालात में वो भी कर जाता है जो उसे नहीं करना चाहिए। समाचार पत्रों में आये दिन नशाखोरों की कोई न कोई हरकत सुनने व पढ़ने को मिलती ही रहती हैं। नशाखोरी से न केवल अपराध बढ़ रहे हैं बल्कि इससे दुघर्टनाएँ भी तेजी से बढ़ रही है। आधे से अधिक सड़क दुर्घटनाओं के लिये नशाखोरी को ही जिम्मेदार माना गया है। कभी यात्री बस पलट जाती है तो कभी बारातियों से भरा वाहन दुर्घटना ग्रस्त हो जाता है। पर परवाह नहीं क्योंकि नशा इंसान पर इस कद्र हावी हो जाता है कि उसे किसी भी जिन्दगी की परवाह ही नहीं रहती।

आजकल तो नशा करना ऐश्वर्य प्रदर्शन एक फैशन बन गया है। अनेक लोग इसे विलासिता की वस्तु मान कर इस्तेमाल करते हैं। अपनी तथाकथित प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाने के लिये मँहगी से मँहगी शराब पीना आज फैशन हो गया है। तीज त्योहार हो या माँगलिक कार्य पीने वालों को तो केवल बहाना ही चाहिए। नशे के लिये आज इंसान घर

परिवार, बाल बच्चों एवं जमींन जायदाद सबकुछ त्यागने को तैयार हो जाता है। रिश्ते–नाते तक छोड़ देता है।

निर्बल वर्ग युवा तो युवा भी नशे की प्रवृत्ति से अछूती नहीं हैं। हर युग में चर्चा और आकर्षण का केन्द्र बिन्दु रहने वाली नारी आज पल–पल बदलते परिवेश में जिस प्रकार पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है, वह प्रारम्भ से रूढ़िवादी परम्पराओं और प्रथाओं से घिरे भारतीय नारी समाज के लिये सुखद बात है। लेकिन, दूसरी ओर आधुनिक बनने के चक्कर में पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति को अपना कर नशाखोरी जहरीले रास्ते पर भी चल पड़ी है। आज भारत देश में नवयुवतियों पर नशाखोरी का भूत किस तरह सवार है, इसका पता हमें 'इण्डियन कांउसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च' द्वारा किये गये सर्वेक्षण से लगता है। आज हमारी चिन्ता का सबसे बड़ा विषय भी में तेजी से बढ़ती नशाखोरी की प्रवृत्ति ही है। आज हम किसी भी सर्वाजनिक स्थान के बाहर यह नजारा खुलेआम देख सकते हैं अनेक निर्बल वर्ग युवा बच्चे एवं पारिवारिक सिगरेट के छल्ले उड़ा रहे हैं, पान–मसाला चबा रहे हैं और मदिरालय के आस–पास मंडरा रहे हैं।

समाज में बढ़ती नशाखोरी पर 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' द्वारा कराये गये एक सर्वे के अनुसार, भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों की लगभग साठ प्रतिशत लड़कियाँ धूम्रपान की शौकीन पाई गई हैं और कालेजों व पब्लिक स्कूलों के होस्टलों में रहने वाले लड़के–लड़कियाँ भी नशीली

दवाईयों के शिकार हैं। इन सर्वे रिपोर्टों के अलावा भी एक तथ्य से सर्वविदित है कि देह व्यापार में लिप्त अधिकतर महिलाएँ और नवयुवतियाँ शराब पीने के बाद ही अपने पुरुष ग्राहकों से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती हैं, जो एड्स जैसे महारोग की भयावह की ओर बढ़ाता है। बहरहाल वैसे हमारे लिये अभी भी सुखद बात यह है कि देश में ड्रग्स व धूम्रपान की शौकीन नवयुवतियों की तादाद केवल कुछ महानगरों तक ही सिमटी हुई है। छोटे शहरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ भी इन कुप्रवृत्तियों से दूर हैं, इसलिये इस समय इन आदतों से छुटकारा दिलाने के लिये सरकार व समाजसेवी संस्थाएँ जो कार्यक्रम चला रही हैं, उसे और तेजी प्रदान की जाए, तो सम्भव है कि नवयुवतियों को नशाखोरी के गर्त में जाने से बचाया जा सकता है, क्योंकि ये ऐसा रोग नहीं है कि जिससे छुटकारा नहीं पाया जा सकता। आवश्यकता केवल अपने आप में दृढ़ इच्छाशक्ति पैदा करने की है और उस वातावरण से बचने की है, जहाँ नशाखोरी का प्रचलन हो। साथ ही, मन–मस्तिष्क से इस गलतफहमी को भी निकालना होगा कि गम भूलने और अपने–आपको आधुनिक बताने के लिये नशाखोरी को अपनाना आवश्यक है, क्योंकि वर्तमान समय में नशे के प्रति बने इस भरम के कारण ही अच्छे–खासे लड़के–लड़कियाँ इस अंधी गली में घुस जाते हैं, जहाँ उन्हें मिलता क्या है? एक पीड़ादायेक, रोगों से ग्रस्त जीवन और घर परिवार व समाज में अपमान।

अब सवाल यह पैदा होता है कि आखिर वे कौन से कारण हैं, जिससे प्रभावित होकर निर्बल वर्ग के युवा नशाखोरी जैसे कुप्रवृत्तियों का शिकार होते जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में सर्वे रिपोर्ट में बताया गया कि भारत में अधिकतर युवक गम को भुलाने के लिये नशीली दवाईयों के सेवन की तरफ मुड़ जाते हैं वे जहाँ नशा कर सकून का अनुभव करते हैं। तोहफा, जो जीते जी जिन्दगी को शर्त में धकेल देता है। उत्तर प्रदेश के आगरा नगर के निर्बल युवा लोगों को भी प्रभावित किया है।

रिपोर्ट में ये भी स्पष्ट किया गया कि भारत में अभी नशा करने वाली शादीशुदा औरतों की तदाद बहुत कम है। नशाखोरी की पाई। वैसे भी हमारे देश में नशाखोरी या धूम्रपान करने वाली की तादाद बड़े शहर में ही अधिक है। शर्म की बात तो ये है कि इन कुप्रवृत्तियों का शिकार वह जो इसके दुष्परिणामों को भली–भाँति जानता है, फिर भी वह 'आ बैल मुझे मार' वाली कहावत को चरितार्थ करते हुये नशाखोरी की अंधी गलियों में घुसते जा रहा है। इससे बड़ी हास्यास्पद स्थिति और क्यों हो सकती है कि जिस तम्बाकू की पत्तियों को तक नहीं खाते, उसका सेवन समझदार मनुष्य बड़े शौक और ठसक से करते हैं। सिगरेट में भरी जाने वाली तम्बाकू, जो 'निकोटियन' नामक पौधों की सूखी पत्तियाँ हैं, जब धुएँ या खाली खाने के साथ शरीर में जाती हैं, तो इसका प्रभाव शरीर पर धीमे जहर के रूप में होता है। इसके दुष्प्रभाव से गर्भवती महिला को गर्भपात, मृत गर्भ

या कम वजन का बच्चा पैदा होता है। निकोटिन के कारण मुँह व गले कैंसर, फेंफड़ों के रोग पैदा होते हैं। इसके बावजूद पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण में फंस चुका युवक धूम्रपान जैसे विषैले प्रभाव को जानने के बाद भी इस शौक की तरफ बढ़ते जा रहे हैं, जबकि अफीम, गाँजा, भाँग, चरस, ब्राउन सुगर, मार्फिन, एलएसडी जैसे ड्रग्स के विषैले प्रभाव की कल्पना करने से ही कलेजा काँप उठता है। नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति के लिये हमारी कार्यपालिका यानी सरकार ही मुख्य रूप से दोषी मानी जायेगी। नैतिक शिक्षाका पाठ तो युवा कब का भूल चुके हैं क्योंकि उन्हें हमने विरासत में अश्लील टी.वी. सीरियल व पश्चिम की भोड़ी नकल दी है। इसके लिये सरकार द्वारा सरकारी राजस्व अर्जित करने की आड़ में चलायी जा रही शराब की फैक्ट्रियाँ और नशीली वस्तुएँ बनाने वाली कम्पनियाँ भी जिम्मेवार हैं जिनसे सरकार को करोड़ों रुपये की आय होती है लेकिन समाज को मिलता है विनाश।

नशे के निर्माता व वितरक तो पूँजीवादी ही रहे हैं तो लेकिन लोगों के जीवन की खुशी को भी बंजर बनाया जा रहा है। प्रतिवर्ष लाखों–करोड़ों जिन्दगियों को तबाह करने का लाइसेन्स मुट्ठीभर लोगों को दे दिया जाता है। देश में भौतिक विकास के नाम पर प्रतिवर्ष अरबों रुपये खर्च कर दिये जाते हैं लेकिन समझ में नहीं आता कि यह विकास किसके लिये? नशे की गति में समा चुके लोगों के लिये जबकि किसी भी समाज के भौतिक विकास के साथ–साथ

उसका नैतिक विकास भी जरूरी है। देश का मानव संसाधन कितना स्वस्थ, पुष्ट एवं मर्यादित है यह देश की सरकार को ही देखना होगा। क्योंकि देश के मानव संसाधन के समुचित दोहन से ही राष्ट्र, विकसित हो सकता। जरूरत है देश के मौजूद मानव संसाधन को रचनात्मक विकास की दिशा में लगाने की। कोई भी देश या समाज अपने मानव संसाधन को निरोह, निःशक्त या निर्बल बनाकर खुद शक्तिशाली नहीं बन सकता है? यह नशाखोरी का ही दुष्परिणाम है कि आज का मानव कमजोर, आलसी व लापरवाह होता जा रहा है। आज समाज का नैतिक पतन हो रहा है। हमें नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति को रोकना होगा। लोगों के हाथों में दारू की बोतल नहीं बल्कि काम करने वाले औजार होने चाहिए। कौन देगा उन्हें ऐसी प्रेरणा? इस बुरी लत को सरकार के किसी कानून से खत्म नहीं किया जा सकता। इसके लिये समाज में जागरूकता लानी होगी। बेहतर होगा कि इंसान अपनी कीमती जिन्दगी से प्यार करते हुये इस दलदल में संलग्नता से बचे और औरों को भी बनाये। संकल्प शक्ति के समक्ष इस कुप्रवृत्ति की शक्ति बहुत तुच्छ है क्योंकि किसी ने सही कहा है आज बस में जिसके है आदमी, आज छाई है मौत बनकर, जो कर रही है बर्बाद जिन्दगी है उस मौत का दूसरा नाम है नशा। नई पीढ़ी को इस नशे के दुष्परिणामों का बोध कराना होगा। समाजसेवियों एवं समाज के कर्णधारों को बिना वक्त गवाये अब इस दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है क्योंकि हमें शान्ति, सद्भाव व भाईचारे

का वातावरण को बिना वक्त गवाये अब इस दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है क्योंकि हमें शान्ति, सद्भाव व भाईचारे का वातावरण निर्मित कर स्वस्थ समाज का निर्माण करना है।

अन्तर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस प्रत्येक वर्ष 26 जून को मनाया जाता है। नशीली वस्तुओं और पदार्थों के निवारण हेतु 'संयुक्त राष्ट्र महासभा' ने 7 दिसम्बर, 1987 को प्रस्ताव संख्या 42/112 पारित कर हर वर्ष 26 जून को 'अन्तर्राष्ट्रीय नशा व मादक पदार्थ निषेध दिवस' मानाने का निर्णय लिया था। यह एक तरफ लोगों में चेतना फैलाता है, वहीं दूसरी ओर नशे के लती लोगों के उपचार की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य करता है। 'अन्तर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस' के अवसर पर मादक पदार्थ एवं अपराध से मुकाबले के लिये 'संयुक्त राष्ट्र संघ' का कार्यालय यूएनओडीसी एक नारा देता है। इस अवसर पर मादक पदार्थों में मुकाबले के लिये विभिन्न देशों द्वारा उठाये गये कदमों तथा मार्ग में उत्पन्न चुनौतियों और उनके निवारण का उल्लेख किया जाता है। '26 जून' का दिन मादक पदार्थों से मुकाबले का प्रतीक बन गया है। इस अवसर पर मादक पदार्थों के उत्पादन, तस्करी एवं सेवन के दुष्परिणामों से लोगों को अवगत कराया जाता है।

समाज में दिन–प्रतिदिन शराब, मादक पदार्थों व द्रव्यों के सेवन की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को रोकने के लिये सामाजिक न्याय विभाग द्वारा अभियान चलाया गया। इस

आयोजन का उद्देश्य समाज में बढ़ती हुई मद्यपान, तम्बाकू, गुटखा, सिगरेट की लत एवं नशीले मादक द्रव्यों, पदार्थों के खराब परिणामों से समाज को अवगत कराना था, ताकि मादक द्रव्य एवं मादक पदार्थों के सेवन की रोकथाम के लिये उचित वातावरण एवं चेतना का निर्माण हो सके। अन्तराष्ट्रीय स्तर पर मादक पदार्थ एवं गैर–कानूनी लेन–देन ज्यादा बढ़ जाने के कारण चिंता का विषय बन गया, तब युनाइटेड नेशन जनरल असम्बली ने 7 दिसम्बर 1987 में एक प्रस्ताव पारित किया, जिसके अन्तर्गत प्रतिवर्ष 26 जून को अन्तर्राष्ट्रीय मादक पदार्थ एवं गैर कानूनी लेन–देन विरोधी दिवस के रूप में मनाये जाने का निश्चय किया गया। इस दिवस के माध्यम से जन–साधारण को नशे के खतरे एवं नशे में गैर–कानूनी लेन–देन के खिलाफ सरकार द्वारा उठाये जाने वाले कदमों को परिचित कराया जाना आवश्यक समझा गया।

मादक पदार्थों के नशे की लत आज के युवाओं में तेजी से फैल रही है। कई बार फैशन की खातिर दोस्तों के उकसावे पर लिये गये ये मादक पदार्थ अक्सर जानलेवा होता हैं। ऐसा बराबर देखा गया है। सिगरेट, शराब, गाँजा, भाँग और धूम्रपान सहित मादक दवाओं के सेवन की ओर अपने आप कदम बढ़ जाते हैं। पहले उन्हें मादक पदार्थ फ्री में उपलब्ध कराकर इसका लती बनाया जाता है और फिर लती बनने पर वे इसके लिये चोरी से लेकर अपराध तक करने को तैयार हो जाते हैं। नशे के लिये उपयोग में लाई जाने

वाली सुइयाँ एच.आई.वी. का कारण भी बनती हैं, जो अन्ततः एड्स का रूप धारण कर लेती हैं। आज देश में शराब का सेवन करने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है, साथ ही बढ़ रही है, मद्यपान के कारण मौत से जूझने वालों की संख्या 15 से 20 प्रतिशत भारतीय आज शराब पी रहे हैं। 20 साल पहले जहाँ 300 लोगों में से एक व्यक्ति शराब का सेवन करता था, वहीं आज 20 में से एक व्यक्ति शराबखोर हैं।

कुछ हद तक आधुनिक रहन–सहन, पश्चिम का अन्धानुकरण, मद्यपन को सामाजिक मान्यता से शराब की उपलब्धता, तनाव, अवसाद व पुरुषों से बराबरी की होड़ को इसके लिये जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। पुराने समय के मुकाबले आधुनिक युग में शराब को अधिक सामाजिक मान्यता मिली हुई है। बड़ी पार्टियों में तो यह आवश्यक अंग बन गई हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, जन संचार माध्यमों आदि से जुड़ी महिलाएँ पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंग कर शराब को अपना लेती हैं। नशे से मुक्ति के लिये समय–समय पर सरकार और स्वयं सेवी संस्थाएँ पहले करती रहती हैं। पर इसके लिये स्वयं व्यक्ति और परिवार जनों की भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण है। अभिभावकों को अक्सर सुझाव दिया जाता है कि वे अपने बच्चों पर नजर रखें और उनके नये मित्र दिखाई देने, क्षणिक उत्तेजना या चिड़चिड़ापन होने, जेब खर्च बढ़ने देर रात्रि घर लौटने, थकावट, बेचैनी, अर्द्धनिद्राग्रस्त रहने, बोझिल पलकें, आँखों में

चमक व चेहरे पर भावशून्यता, आँखों की लाली छिपाने के लिये बराबर धूम के चश्मे का प्रयोग करते रहने, उल्टियाँ होने, निरोधक शक्ति कम हो जाने के कारण अक्सर बीमार रहने, परिवार के सदस्यों से दूर–दूर रहने, भूख न लगने व वजन के निरन्तर गिरने, नींद न आने, खाँसी के दौरे पड़ने, अल्पकालीन स्मृति में ह्रास, त्वचा पर चकते पड़ जाने, उँगलियों के पोरों पर जले का निशान होने, बाहों पर सुई के निशान दिखाई देने, ड्रग न मिलने पर आँखों–नाक से पानी बहने–शरीर में दर्द–खाँसी– उल्टी व बेचैनी होने, व्यक्तिगत सफाई पर ध्यान न देने, बाल–कपड़े अस्त व्यस्त रहने, नाखून बढ़े रहने, शौचालय में देर तक रहने, घरेलू सामानों के एक–एक कर गायब होते जाने आदत के तौर पर झूठ बोलने, तर्क–वितर्क करने, रात में उठकर सिगरेट पीने, मिठाईयों के प्रति आकर्षण बढ़ जाने, शैक्षिक उपलब्धियों में लगातार गिरावट आने जाने में उपस्थिति कम होते जाने, प्रायः जल्दबाजी में घर से बाहर चले जाने एवं कपड़ों पर सिगरेट के जले छिद्र दिखाई देने जैसे लक्षणों के दिखने पर सतर्क हो जाये। यह परिवार के मादक–पदार्थों का व्यसनी होने की निशानी है। तम्बाकू वाले पान मसाला का तो इतना ज्यादा प्रचलन हो चुका है जिसकी रोकथाम के लिये सरकारी एवं गैर सरकारी साधन–साधनों को प्रयोग में लाया जाता है। फिर भी लोग मानते ही नहीं हैं।

❁●❁●❁